अजायब बानी

मासिक पत्रिका

सितम्बर–2020

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 Sept. 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd Sept. 2020

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–पाँचवां | सितम्बर–2020

बाबा जी, आपके शुभ जन्मदिवस पर आपके बच्चे आपको बहुत–बहुत बधाईयाँ देते हैं।

4
भावनाओं को भजनों द्वारा बताना

5
की कहां ते किस मुँह नाल आखां

7
कौन सौभाग्यशाली है?

9
गुरु के बिना कोई राह नहीं दिखा सकता

25
समय का सही इस्तेमाल

32
रक्षक

34
धन्य अजायब

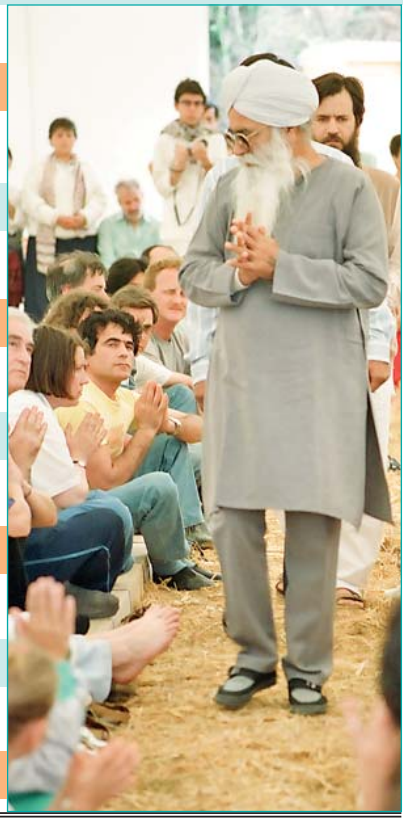

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह, राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 222 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

13 जनवरी1990

भावनाओं को भजनों द्वारा बताना

मुम्बई

परमात्मा कृपाल ने हमें अपनी याद में बैठने का जो अनमोल अवसर दिया है, मुझे आशा है कि हम इस अनमोल अवसर का लाभ उठाएंगे।

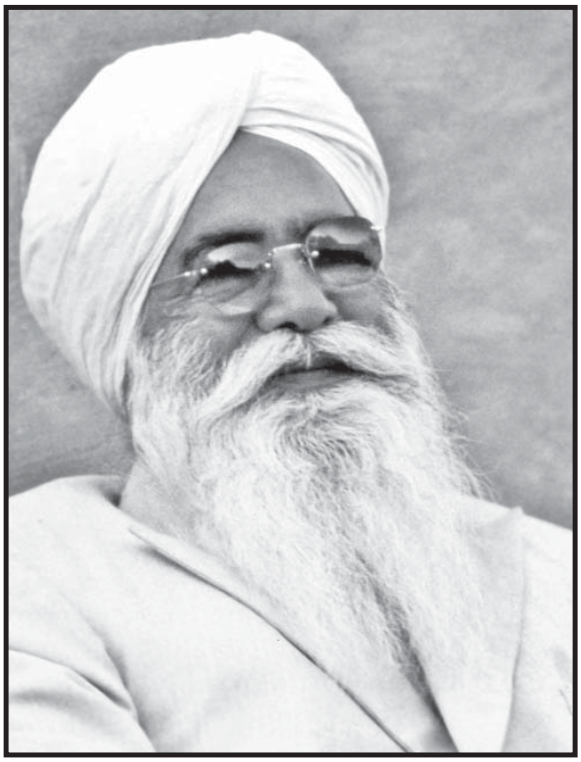

गुरु प्यार के भजन गाकर हम गुरु के प्रति अपना प्रेम और आभार व्यक्त करते हैं।

जब हम सतगुरु के पास जाते हैं और उनसे कहते हैं कि आप करण–कारण हैं, समरथ हैं, सर्वशक्तिमान है तो वे हमें ऐसा कहने की इजाजत नहीं देते अगर हम साफ तौर पर यह कहते हैं कि हम पापी हैं या गरीब हैं तो वे यह भी पसंद नहीं करते।

भजन गाना अपने गुरु की महिमा को गाने का एक बहुत अच्छा तरीका है कि हम पापी हैं गुनहगार हैं, आप हम पर दया करें। मैं अपने गुरु कृपाल का धन्यवाद करता हूँ कि आपने हमें अपनी महिमा गाने का कीमती मौका दिया। ***

की कहां ते किस मुँह नाल आखां

की कहां ते किस मुंह नाल आखां
बक्श दे सतगुरु ऐब मेरे x 2
की कहां ते किस.....

1. किथों शुरू करां की आखां, समझ ना आवे मैनूं जी,
बेहिसाब ने अवगुण मेरे, किंज सुणावां तैनूं जी x 2
कैंदया दाता लजया आवे x 2 किंज आख सुणावां तैनूं जी,
की कहां ते किस.....

2. भुलया हां मैं जीव निमाणा, चढ़ गया मन दे हथां विच,
भुलया तेरा सिमरन दाता, पै गया मंदड़े कम्मां विच x 2
तक्कां हुण किस मुंह नाल दाता x 2 तेरियां सोणियां अखां विच,
की कहां ते किस.....

3. हर इक ऐब मेरे विच दाता, लम्बी लिस्ट गुनाहां दी,
फोलीं नां कोई वरका इस चों, हथ जोड़ कुरलावां जी x 2
कज लवीं तूं परदा दाता x 2 जिवें अज तक कजया जी,
की कहां ते किस.....

4. पाड़दे वरके दाता मेरे, कीते खोटेयां कर्मां दे,
दया बणी रहे बस दाता, मेरे जहे बेशर्मां ते x 2
बक्श दे बक्शणहार कहावें x 2 कोई नमक ना छिड़के जख्मा ते,
की कहां ते किस.....

5. अजायब सतगुरु दाता तूं हैं, तूं ही लाज रखावेंगा,
ऐबां भरे 'गुरमेल' पापी नूं, तूं ही चरणी लावेंगा x 2
चरणी डिगयां पापीयां नूं दाता x 2 तूं ही पार लगावेंगा,
की कहां ते किस.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

12 जनवरी 1992

कौन सौभाग्यशाली हैं?

मुम्बई

वही सौभाग्यशाली हैं जो परमात्मा का गुणगान करते हैं, सिर्फ वही परमात्मा का गुणगान कर सकते हैं जिन्हें परमात्मा अपने चुनाव में ले लेता है। मुझे मेरे प्यारे गुरु के सामने भजन गाने के कई अवसर मिले हैं। मेरे गुरु कृपाल मेरे द्वारा गाए भजनों को सुनकर बहुत खुश होते थे। जब मैं यह भजन गाता:

तेरे ते गुरु जी मेरा राई रत्ती जोर न, तेरे बाजो दुनिया ते मेरा कोई होर न,

तब आप कहते ऐसा मत कहो क्योंकि गुरु के पास सब कुछ है। जब शिष्य गुरु से प्रेम करता है और अंदर जाता है तो उसका भी गुरु पर जोर है। आज आपकी दया से ही मैं आपसे ये भजन सुन रहा हूँ।

आप भजन गाने से पहले पृष्ठ संख्या अवश्य बोलें ताकि दूसरे प्रेमियों के लिए आपके साथ भजन गाना आसान हो जाए।

लिखन वालेया तू होके दयाल लिख दे
मेरे हिरदे विच गुरां दां प्यार लिख दे

मैं परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवादी हूँ कि उन्होंने हमें अपनी महिमा गाने का मौका दिया है। अभी जो भजन गाया गया है, वह भजन मैं बचपन से अपने गुरु को मिलने से पहले से ही गाता रहा हूँ। मैं यह भजन सर्वशक्तिमान परमात्मा के लिए गाता था, भले ही मैंने उन्हें नहीं देखा था। मेरी आत्मा कुछ तलाश कर रही थी मुझे लगता था जैसे मैंने अपना कुछ खो दिया है।

मैं जब आँखें बंद करके बैठने लगा और फर्श पर सोने लगा तो मेरे पिता को बहुत चिंता हुई। मेरे पिता ने कहा, ''मैंने तेरे लिए इतना कुछ बनाया है तू यह सब क्यों कर रहा है?'' मेरे पिता ने पंडित को बुलवाया और पंडित ने सोने की कलम से मेरी जुबान पर ॐ लिख दिया। मैंने इस भजन में यही कहा है कि मैं अपनी जुबान पर ॐ नहीं अपने गुरु का नाम लिखना चाहता हूँ।

बचपन से ही मेरी यही प्रार्थना थी, ''हे दयालु! मेरे हाथों में गुरु की सेवा लिख दें, मेरे माथे में गुरु की ज्योत और मेरी आँखों में गुरु का दर्शन लिख दे लेकिन मेरे मस्तक में गुरु का विछोड़ा न लिखें।'' जब सर्वशक्तिमान परमात्मा कृपाल के रुप में मुझे मिले तो उन्होंने उसी समय से इस दुनिया से जाने का संकेत देना शुरु कर दिया था। मैंने आपसे प्रार्थना की कि आप मेरी किस्मत में कुछ भी लिख सकते हैं लेकिन अपना विछोड़ा न लिखें।

एक तंदरूस्त आदमी बीमार आदमी के दर्द को नहीं जान सकता। जो अपने प्यारे से बिछुड़ा है वही उस दर्द को समझ सकता है। आप सभी के भजन बहुत मधुर थे। हम आपकी दया से ही ये भजन गा सके। अब आप सब अपनी आँखें बंद करके उसकी याद में बैठें। ***

स्वामी जी महाराज की बानी
11 सितम्बर 1993

गुरु के बिना कोई राह नहीं दिखा सकता

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान DVD No-243

अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में कोटन बार नमस्कार है। मुझे कई राजाओं से मिलने का मौका मिला है। मैंने आर्मी में रहते हुए अपनी ड्यूटी के दौरान पटियाला, कपूरथला और नाभा के राजाओं की मृत्यु देखी है। मैं पटियाला का खास जिक्र किया करता हूँ कि पटियाला के राजा की मृत्यु के समय सैंकड़ो गार्ड उसके महल के आस–पास थे। अफसर चेक कर रहा था कि कोई गार्ड सुस्त न हो जाए।

जब अंत समय आता है उस समय बड़ी चौकसी होती है कहीं कोई गड़बड़ न हो जाए। अंदर सिर्फ दो–चार अहलकारों को ही पता होता है लेकिन मौत के फरिश्ते का उन्हें भी पता नहीं होता, जो बाहर खड़े होते हैं उन्हें तो बिल्कुल भी ज्ञान नहीं होता कि अंदर क्या हो रहा है?

हम उस जबरदस्त यम को भूल जाते हैं। पता नहीं इतने बड़े महल से इतने गार्डों के होते हुए वह कैसे उठाकर ले जाता है, हमारी फौजें खड़ी रह जाती हैं। कबीर साहब बहुत प्यार से कहते हैं:

आसी पासी योद्धा खड़े सभी बजावें गाल।
मंज महल्लों ले गया ऐसा काल कराल।।

हमारे रक्षको को पता नहीं लगता कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान पकड़कर ले कहाँ गया, वे हमारी क्या मदद करेंगे? सन्त–सतगुरु इसी बात को समझाने के लिए संसार में आते हैं। सन्तों को पूरी जानकारी होती है कि किस तरह परमात्मा से मिलना है। सन्त परमात्मा में समाए हुए पुरुष होते हैं। हम परमात्मा की खोज में कान फड़वाकर योगी

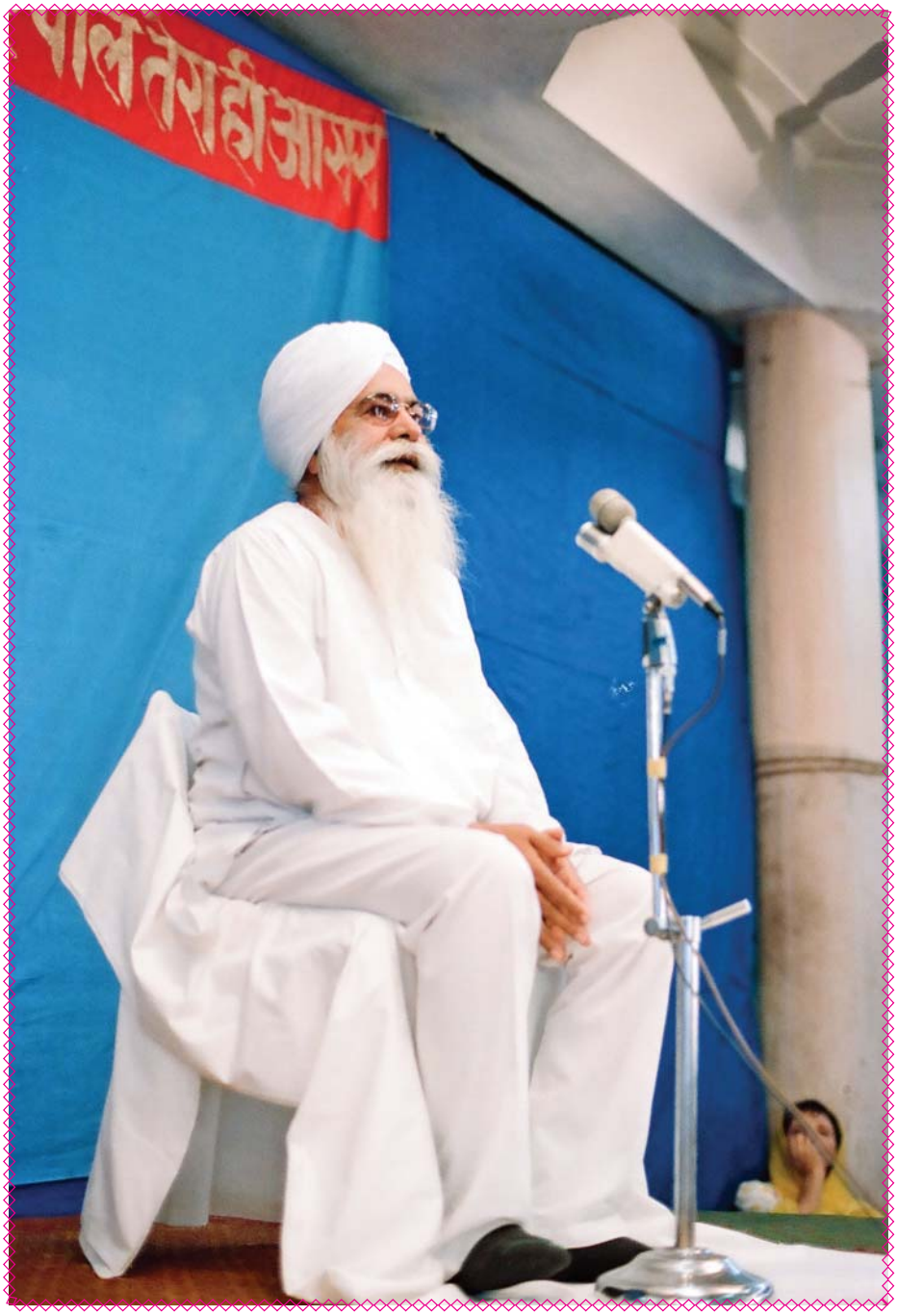

बन जाते हैं, भगवे कपड़े पहन लेते हैं, घर–बार छोड़कर जंगलों–पहाड़ो में चले जाते हैं। वेदों–शास्त्रों का आसरा लेते हैं, पत्थर पूजते हैं और हर तरह के कठिन से कठिन साधन करते हैं लेकिन पूरे महात्मा की शरण में जाने से सदा ही परहेज करते हैं।

मेरा अपना जातिय मसला भी था। मैंने सिर्फ कान ही नहीं फड़वाए बाकी सारे कर्म–धर्म और हठयोग बहुत तसल्ली और प्यार से किए थे। परमात्मा कृपाल सदा ही कहते थे, ''भगवान का मिलना मुश्किल नहीं इंसान का बनना मुश्किल है।'' हम कहते हैं कि हम सारे ही इंसान हैं।

सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी ने जिस समय सिकन्दरपुर की जमीन आबाद की उस समय वह इलाका मुसलमानों का था। रात को मुसलमान आपके पास आकर बैठ जाते और बातचीत चलती रहती। एक दिन महाराज सावन सिंह जी ने उन लोगों से कहा, ''तुम्हारे में से कोई मुसलमान भी है?'' यह सुनकर सारे ही मुसलमान परेशान हुए और उन्होनें कहा कि हम सारे ही मुसलमान हैं। आपने कहा, ''सच्चा मुसलमान वह हैं जिसके पास कलमा है।'' उन मुसलमानों ने कहा, ''हाँ जी! हम सबके पास कलमा है।'' उन्होंने बड़े प्यार से पढ़कर सुनाया:

ला इलाह लिल लल्हा मौहम्मद रसूल लिल्लाह ।

महाराज सावन ने कहा कि यह तो वर्णात्मक है। मैंने सुना है कि कलमें के नजदीक शैतान नहीं आता। सन्त भी कहते हैं कि नाम वाले के पास यम नहीं आता। उस वक्त पता लगता है जब हम अपने साथियों को संसार छोड़ते हुए देखते हैं। आपके बहुत से भाई दिन–रात कचहरियों में झूठ बोलते फिरते हैं। उन मुसलमानों ने कहा कि हमने आपको जो बोलकर बताया है हम इसे ही कलमा समझते हैं। महाराज जी ने उन लोगों को बहुत प्यार से समझाया, बहुत से मुसलमान आपके नामलेवा सतसंगी बने।

इसी तरह हम सब इंसान हैं। प्यारेयो! इंसान की तो शक्ल है लेकिन कबीर साहब कहते हैं:

पशु घड़ेन्ता नर घड़ा, चूक गया सींग पूँछ।
अक्ल वही हैवान की, बिना सींग बिन पूँछ।।

परमात्मा पशु बनाने लगा था सींग और पूँछ लगाने थे लेकिन इंसान बना दिया, नाक और मुँह लगा दिया। इसी तरह गिरधव राय जी कहते हैं, ''ब्रह्मा ने गलती करके इसके दाढ़ी–मूँछें लगा दी।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

करतूत पशु की मानस जात, लोक विचारां करे दिन रात ।

इंसान भी सोते हैं, पशु भी सोते हैं। इंसान भी दुःख–सुख, भूख–प्यास महसूस करते हैं और पशु भी करते हैं। इंसान भोग भोगते हैं और पशु भी भोग भोगते हैं। पशुओं को भी अच्छे–बुरे खाने की पहचान है। मौत–पैदाईश इंसानों को भी आती है और पशुओं को भी आती है तो हमारे और पशुओं में क्या फर्क है? महाराज जी कहते हैं, ''इंसान बनें।''

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''पूर्ण खालसा वह है जिसमें ज्योत प्रकट हो गई हो।'' परमात्मा ने हम सबके अंदर प्रकाश और अपनी आवाज रखी है। सन्त–महात्मा हमें बाहर किसी भी आडंबर में नहीं फँसाते।

मैंने अपनी जिंदगी में बहुत सारे कर्म किए हैं। यह परमात्मा कृपाल की ही दया थी जो आप खुद ही बिना बुलाए आए। पता तब लगता है जब पूरा गुरु मिले। मैं बताया करता हूँ कि गुरु तो पूरा होता ही है लेकिन शिष्य भी मन–इन्द्रियों की गुलामी से ऊपर उठा हुआ हो अगर शिष्य में वैसा ही काम, क्रोध, ठग्गी, बेईमानी है तो गुरु क्या करे?

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अँधे एक न लग्गी ज्यों बाँस वजाई फूँक।।

हम यह जरूर कहते हैं कि गुरु पूरा होना चाहिए। हमें खोज करनी चाहिए अगर हमने हांडी भी लेनी है तो खड़का कर लें।

गुरु मिले जब धुन का भेदी शिष्य विरह धर आई।
सुरत शब्द की होय कमाई।

स्वामी जी महाराज कहते हैं जब गुरु मिल जाता है तब पता चलता है कि गुरु हमें क्या देने के लिए आता है? गुरु इंसान है। बड़े–बड़े महात्मा इस संसार में आए किसी को उनकी परख नहीं आई लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं किसी ने उन्हें परखा नहीं अगर उन्हें परखा न होता तो आज हम उनकी कहानियाँ क्यों पढ़ते।

गुरु नानकदेव जी को भाई लैहणा ने परखा। कबीर साहब को धर्मदास ने परखा। बाबा जयमल सिंह जी को सावन सिंह जी ने परखा। सावन सिंह जी को कृपाल सिंह जी ने परखा। महाराज कृपाल ने पच्चीस साल होका दिया, ''देने वाले का क्या कसूर है? वह तो ढूँढ़ता फिरता है।''

मैं कभी–कभी वह वक्त याद किया करता हूँ जब मुझे परमात्मा कृपाल मिले तो आपने ठंडा होका लेकर कहा, ''आज मैं अपनी जिंदगी में बहुत खुश हूँ, मैं अपने गुरु हुजूर महाराज का धन्यवाद करता हूँ।'' मैंने आपसे बड़े प्यार से पूछा, ''आपको ऐसी क्या खुशी है?'' आपने कहा, ''जब तुझे भी जिंदगी में पूरा शिष्य मिलेगा तब तेरी भी ऐसी ही हालत होगी।'' मैंने रोकर यही कहा कि मैं तो एक नीच आदमी हूँ:

तिल तिल दा अपराधी तेरा, रत्ती रत्ती दा चोर।
पल पल दा मैं गुणही भरया बख्शी अवगुण मोर।।

मैं तो एक अपराधी जीव हूँ, पता नहीं तुझे मुझ पर क्यों दया आई? यह नम्रता भी वह खुद ही बख्शता है। आपको पता ही है हम कैसे जीव हैं? कोई हमारी मामूली सी तारीफ कर दे तो हमारे लिए जमीन पर खड़े होना मुश्किल हो जाता है, हम सोचते हैं कि हमारे अंदर कोई गुण है।

आप जिंदगी में सतगुरु की खोज करें। बेशक खोज करने में हमारा जन्म भी क्यों न चला जाए हम इंसानी जामें से नीचे नहीं जाएंगे। अगर हमारी खोज जबरदस्त है तो वह जरूर मिलेगा, वह बेइंसाफ नहीं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसके दरवाजे पर बैल बंधा है उस घरवाले को बैल का फिक्र है कि मैंने इसे कब पानी पिलाना है कब धूप से छाया में करना है।''

प्यारेयो! हम जिस परमात्मा की खोज करते हैं वह हमें जरूर मिलता है बेशक आप उसे न बुलाएं वह नदियाँ, पहाड़ चीरकर आ जाता है। अगर हम सुजाखे हों हम उसे बुलाएं तो वह खुद ही दया करके आ जाता है, उसे कोई रोक नहीं सकता। दुनिया के पास ऐसा कोई थर्मामीटर नहीं जिससे हम उसकी परख कर सकें।

जंगलों–पहाड़ो से फिरते–फिरते तुलसी साहब ने हाथरस जिला अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) में आकर अपना सतसंग शुरु किया। सन्त जहाँ बैठ जाते हैं वहाँ भँवरे की तरह उनकी आत्माएं खिंची हुई चली आती हैं। आपके आस–पास विरोध के भी बहुत तूफान उठे क्योंकि सच की हमेशा विरोधता होती आई है।

आगरा का सेठ देवलाली सिंह आपका सेवक बना, आपके और भी बहुत सेवक बने। तुलसी साहब सेठ देवलाली सिंह के घर जाया करते थे। जिन प्रेमियों को सेठ देवलाली सिंह का घर देखने का मौका मिला है उन्हें पता है कि उनका घर एक तंग गली में था। वहाँ जाना बहुत मुश्किल था अगर कीचड़ वगैरहा हो तो और भी मुश्किल हो जाता था, आजकल तो गलियाँ पक्की हैं सड़क बनी हुई है।

सेठ देवलाली सिंह का परिवार तुलसी साहब को साहब जी कहकर पुकारता था। यह उस समय का वाक्या है जब थोड़ी देर पहले बारिश हुई थी, तुलसी साहब के पैर कीचड़ से भरे हुए थे। सेठ देवलाली सिंह

के घर के बाहर बीबीयों ने अपने कीमती कपड़े सूखने के लिए डाले हुए थे। तुलसी साहब उन कपड़ो पर पैर रखकर अंदर चले गए। जैसे–जैसे बीबीयों को पता चला वे मस्त होकर तुलसी साहब के दर्शन कर रही थी। तुलसी साहब ने कहा, ''मैंने तुम्हारे कीमती कपड़े खराब कर दिए हैं।'' सेठ देवलाली सिंह की माता ने तुलसी साहब से कहा, ''साहब जी! कपड़े खराब नहीं हुए बल्कि साफ हो गए हैं, बहुत अच्छा हुआ।'' बीबीयाँ दर्शन में मग्न थी। आपके एक सेवक ने बीबीयों से कहा कि तुम यहाँ से चली जाओ तुम्हारे कपड़ों में से पसीने की बदबू आ रही है। तुलसी साहब ने कहा, ''इन्हें बैठी रहने दे तुझे इनमें से बदबू आती है, मुझे बदबू नहीं आती; तुझे नहीं पता इनमें कितना प्यार और कितनी तड़प है।''

जब प्रेमी अपने प्यार की हदें पार कर जाते हैं तो गुरु को भी कुछ देना पड़ता है लेकिन हमारे अंदर सब्र कहाँ है? हम तो दिन–रात अपने ख्यालों में ही दौड़ते फिरते हैं। तुलसी साहब ने कहा, ''मैं आप लोगों से बहुत खुश हूँ क्या माँगते हो? सेठ देवलाली सिंह ने कहा, ''किसी चीज की कमी नहीं लेकिन महामाया कुछ कहती है।'' सेठ देवलाली सिंह के घर कोई बच्चा नहीं था। तुलसी साहब ने हँसकर कहा, ''मालिक देगा लेकिन तुम उसे अपना लड़का मत समझना उसे सतपुरुष समझना।''

तुलसी साहब के वचनों से ही स्वामी जी महाराज पैदा हुए। आपको तुलसी साहब से ही प्रकाश मिला था। स्वामी जी आमतौर पर तुलसी साहब के पास आते–जाते थे। स्वामी जी तुलसी साहब के दर्शन करने के लिए बहुत लम्बा रास्ता पैदल चलकर जाते थे। एक दिन वहाँ मेला लगा हुआ था। तुलसी साहब ने कहा, ''चल भई! आज मालिक की मौज है।'' उस समय तुलसी साहब बहुत कमजोर हो चुके थे। स्वामी जी उन्हें अपने कंधे पर उठाकर मेले में ले गए। तुलसी साहब ने कहा, ''आज जो भी श्रद्धा से दर्शन करेगा उसके ऊपर जरूर दया होगी उसका पर्दा खुल जाएगा।''

स्वामी जी ने तुलसी साहब को उठा रखा था। जीव किसके भाग्य लेकर आए? वहाँ सिर्फ एक वेश्या ने ही आकर सच्चे दिल से तुलसी साहब के चरणों में माथा टेका। तुलसी साहब ने स्वामी जी से कहा, ''तूँ इसके सिर पर हाथ रख दे, मालिक अंदर से इसका दरवाजा खोल देगा।'' स्वामी जी ने कहा, ''मैं कैसे हाथ रख दूँ यह तो आपका काम है।'' तुलसी साहब ने कहा, ''तूँ इसके सिर पर हाथ रख दे आखिर तुझे यह काम करना ही पड़ेगा, मेरे बाद तूने ही संगत की अगुवाई करनी है।''

हम सन्तों की क्या परख कर लेंगे? अगर परख सकते तो हम बड़े-बड़े महात्माओं को कष्ट क्यों देते? महात्मा संसार में आकर मीठे वचन बोलते हैं। उनका हर किसी के साथ प्यार होता है उनके दिल में किसी जाति या औरत-मर्द से अलग भाव नहीं होता वे सबको एक जैसा समझते हैं। महात्मा किसी पर बोझ नहीं बनते, अपना पेट अपनी कमाई से पालते हैं। महात्मा किसी की निन्दा नहीं करते, वे परमात्मा से कम भी नहीं होते; उनकी आत्मा परमात्मा में समाई होती है। **ऐसे महात्मा हमें राह दिखाने के लिए ही संसार में आते हैं।**

हम दुनिया के जीव कितने हठयोग करते हैं लेकिन हाथ-पल्ले कुछ नहीं आता। हम पूरे सन्तों की शरण में जाने से सदा ही परहेज करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भागहीन गुरु न मिले, निकट बैठयां नित पास।

अगर भाग्य में नहीं लिखा तो चाहे महात्मा घर में ही जन्म क्यों न ले ले, पड़ोस में ही क्यों न रहने लग जाए। लाल कब कहता है कि मैं लाल हूँ, लाल का मूल्य जौहरी ही जानता है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है:

गुरु करो खोज कर भाई। बिन गुरु कोइ राह न पाई।।
जग डूबा भौजल धारा। कोइ मिला न काढ़नहारा।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि गुरु के बिना रास्ता नहीं मिलता जब तक रास्ता नहीं मिलता हम ठोकरें ही खाते रहते हैं। आज हम इस विषय–विकारों, मौत–पैदाईश, परेशानियों की दुनिया में इसलिए हाजिर हुए हैं क्योंकि आज तक हमें कोई इससे निकालने वाला नहीं मिला। हम संसार में दिन–रात सुख की तलाश में फिरते हैं। जब बच्चे हैं तो बड़े होने की लालसा लगी है कि बड़े होकर सुखी हो जाएंगे। बड़े हो जाते हैं तो हम अपने आस–पास का वातावरण देखकर सोचते हैं कि शायद शादी–शुदा सुखी होंगे। शादी हो जाती है तो हम खुशियाँ मनाते हैं फूले नहीं समाते पार्टियाँ भी करते हैं। जब पत्नी से बेइत्तफाकी हो जाती है या किसी बात पर अभाव आ जाता है तो वही घर नर्क बनकर रह जाता है।

दिल में ख्याल आता है कि लड़का हो जाए तो खुशी आएगी। शायद बेटे–बेटियों वाले ज्यादा सुखी होंगे। लड़का हो जाता है पार्टियाँ करते हैं लेकिन जब वही लड़का कहेकार न हो या उसे मालिक वापिस बुला ले तो रात को नींद नहीं आती। सारा सुख खुष्क हो जाता है फिर ख्याल आता है शायद धनी सुखी होंगे। धन कमाने के लिए हर किस्म का उद्यम करते हैं ठग्गी मारते हैं बेईमानी करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पापां बाजो आवे नाही, मोया साथ न जाई।

पहली बात तो यह है कि धन हमारे जीते जी ही मुकदमों में या डॉक्टरों की फीस में निकल जाता है। धन को इकट्ठा करने के लिए देह को बीमारियाँ लगा लेते हैं फिर ख्याल आता है कि नेता बहुत सुखी होंगे, लोग इनके जुलूस निकालते हैं गले में हार डालते हैं वे भी फूले नहीं समाते। हमारे सामने इन लोगों की हिस्ट्री भी है कि किस तरह रातों–रात इन्हें गोलियों का निशाना बना दिया जाता है। जो लोग इन नेताओं की अखबारों में वाह–वाह करते थे, गले में हार पहनाते थे वही लोग गालियाँ निकालते हैं, सिर में राख डालते हैं और अखबारों में बेइज्जती करते हैं।

हम जिस चीज में सुख चाहते हैं उसके पीछे कितने दु:ख छिपे हैं। सन्त–महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि सुख कहाँ हैं:

जिन्नी घर जाता आपना से सुखिए भाई।

वही सुखी हैं जो अपने घर जाते हैं। अब सवाल पैदा होता है कि हमारा अपना घर कौन सा है? यह तो हम देखते ही हैं कि यह दुनिया कई बार आबाद हुई, कई बार प्रलय–महाप्रलय आई। हम अपनी जिंदगी में देखते हैं कि हमारे साथी हमारा साथ छोड़कर चले जाते हैं। हमारे माता–पिता या बच्चे हमारे देखते–देखते ही चले जाते हैं। फरीद साहब कहते हैं:

कित्थे तैंडे माँ–प्यो जिन्नी तू जनया ओए।
ते पासो ओह लद गए तू अजे न पतीन्या ओए।।

तेरे बहन–भाई, माता–पिता, दादा–परदादा कहाँ हैं? जब वे इस संसार में नहीं रहे तू कैसे रहेगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो घर छड्डु गवावणा, सो लग्गा मन माहे।
जित्थे जाए तुध वरतणां तिसकी चिन्ता नाहे।।

जो घर हमने छोड़ जाने हैं उनमें मन लगा हुआ है जिस घर में अवश्य जाना है उसका ख्याल नहीं। हमारा घर सच्चखंड है वहाँ मौत–पैदाईश नहीं। जब से हमारी आत्मा सच्चखंड से इस मातलोक में आई है यह अनेको बार पत्नी बनी अनेकों बार पति बनी। कई बार बच्चे बने कई बार माता–पिता बने। यह आज तक टिकी नहीं, जैसे–जैसे परमात्मा से दूर होती गई उसी तरह इसके दु:खों की गठरी भारी होती गई। **अगर हमें कोई राह दिखाने वाला मिला होता** तो आज हम इस दु:खी दुनिया में न बैठे होते।

जग पंडित भेख बिचारे। क्या जोगी ज्ञानी हारे।।
संतन से प्रीत न धारी। क्यों उतरें भौजल पारी।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि गृहस्थियों की क्या ताकत है कि वे जप–तप, पूजा–पाठ या मालिक की भक्ति कर सकें। परमात्मा की

भक्ति न योगी कर सके न पंडित कर सके। पंडित, भाई या पुजारी दूसरे लोगों को तो परमात्मा की बातें सुनाते हैं लेकिन उन्हें खुद परमात्मा के बारे में ज्ञान तक नहीं। वे दूसरों से कहते हैं कि आप बुराई, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से बचें लेकिन खुद बचने का उपाय नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं:

अवरो को उपदेश दे, मुख में पड़हे रेत।
रास बिरानी राख ते, खाया घर का खेत।।

लोगों को उपदेश करते हैं कि बचो भई! ये दूसरे लोगों के खेतों की रखवाली करते हैं और इनका अपना खेत उजड़ा जा रहा है क्योंकि इन बेचारों को रास्ते का पता नहीं। हम सन्तों के पास नहीं जाते लेकिन सन्तों के बिना रास्ता नहीं मिलता। आज ईंट उठाओ तो सन्त निकलता है। कोई अपने आपको सन्त से कम नहीं लिखता। हम यह सोचते हैं कि इस वक्त कोई गुरु पीर है ही नहीं अगर है तो इतनों में से कौन है?

एक कहानी आती है कि अफलातून बहुत समझदार था। उसने काल को धोखा देने के लिए अपनी शक्ल के बहुत से बुत बना लिए। जब काल के दूत उसे लेने के लिए आए तो वे असली अफलातून की पहचान नहीं कर सके क्योंकि वहाँ अनेको ही अफलातून थे। वे वापिस गए तो धर्मराज ने पूछा कि तुम ऐसे ही वापिस आ गए हो? दूतों ने कहा कि वहाँ तो अनेको ही अफलातून खड़े हैं किसे लेकर आना है?

धर्मराज ने कहा पहले तुम उसकी बड़ाई करना कि जिसने ये बुत बनाए हैं वह बहुत अच्छा कारीगर है फिर धीरे से कह देना कि नाक थोड़ा सा टेड़ा लगा हुआ है बाकी सब ठीक है, तभी असली अफलातून बोल पड़ेगा। दूतों ने वहाँ जाकर उसका खूब यश गाया अफलातून बहुत खुश हुआ लेकिन जब यह कहा कि बाकी तो सब ठीक है लेकिन नाक थोड़ा सा टेड़ा लगा है। अफलातून ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी उसने कहा कहाँ नुख्स है? दूतों ने अफलातून की बाँह पकड़कर कहा, ''बस! यहीं नुख्स है।''

जब हम पाखंडियों के पास जाते हैं तो वे अपने पाखंड को सँवारने के लिए बहुत कुछ करते हैं। सच्चे सन्त को प्रचारक रखने की जरूरत नहीं होती। सच्चे सन्त का प्रचार सिर्फ परमात्मा की भक्ति है। जिनके भाग्य में सन्त का मिलाप लिखा है ऐसे प्रेमी खुद ही सन्त के पास पहुँच जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप यह न देखें कि उस स्कूल में ज्यादा बच्चे पढ़ते हैं आप यह देखें! किस स्कूल के ज्यादा बच्चे पास होते हैं।'' जब तक हम ऐसे महात्मा की खोज करके उनकी शरण को दृढ़ करके नहीं पकड़ते तब तक हम कैसे पार जाएंगे। कोई पार से आया हुआ ही हमें पार लेकर जा सकता है। कबीर साहब कहते हैं:

इधर से सब कोई जात है, भार लदाए लदाए।
उधर से सतगुरु आया, जाते पूछो धाए।।

वहाँ से कोई भी नहीं आता जिससे मैं वहाँ का हाल पूछ लूँ। वहाँ से सिर्फ एक 'शब्द–रूप' गुरु ही आता है। जो भाग्यशाली जीव उनके पास जाते हैं वे उन्हें रास्ते पर ही नहीं डालते बल्कि उनकी मदद भी करते हैं।

तप तीरथ बर्त पचे रे। पढ विद्या मान भरे रे।।
भक्ति रस नेक न पाया। भक्तों की सरन न आया।।

हम लोग तीर्थों पर चले जाते हैं हम सबको पता है कि पानी चाहे अपना है चाहे पराया है चाहे कुएँ, नहर या किसी दरिया, समुंद्र का है पानी सिर्फ बदन की मैल ही उतारता है। तीर्थ नहाकर हमारे अंदर नम्रता आनी चाहिए थी लेकिन हमें अहंकार हो जाता है कि हम इतने तीर्थ नहाकर आ गए हैं। विद्या पढ़कर हमें अहंकार हो जाता है, विद्या पढ़कर दुनिया को अपने पीछे लगा लेते हैं कि हमें कोई जीत नहीं सकता। विद्या पढ़कर मान खत्म करना था लेकिन हमारे अंदर एक और मान आ गया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दाँये हाथ से दान करें तो बाँये हाथ को भी पता न लगे।'' लेकिन हम जब तक दान की नुमाईश न

कर लें तब तक खुश नहीं होते। हम सोचते हैं कि परमात्मा बहरा है हम उसे बताएंगे तो ही उसे पता चलेगा। जिसने हमें दिया है उसने कौन सा नुमाईश लगाकर दिया था। दान का मतलब तो यह था कि हम अपनी माया को सफल कर लेते हैं। किसी गरीब की मदद करके अपने हाथ पवित्र कर लेते हैं लेकिन हमारे अंदर अंहकार आ जाता है, हम आशा रखकर दान करते हैं गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दे दे मंगे सहसा गूणा सोभ करे संसार।

हम एक रूपया देते हैं और दस माँगते हैं फिर चाहते हैं कि संसार हमारी शोभा भी करे कि यह बहुत दानवीर है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

तीर्थ व्रत और दान कर, मन में धरे गुमान।
नानक नेह फल जात है, ज्यों कुंचर स्नान।।

हाथी को नहलाते हैं लेकिन वह फिर अपने ऊपर राख डाल लेता है। इसी तरह जप–तप, पूजा–पाठ और विद्या पढ़कर हमने नरम होना था लेकिन हमारे अंदर अहंकार आ जाता है। हम न भक्ति करते हैं न किसी भक्त के चरणों में जाकर बैठते हैं।

भक्ति का भेद न जाना। गुरु को सतपुरुष न माना।।

पहली बात तो यह है कि हमें भक्ति का पता ही नहीं कि भक्ति किसे कहते हैं? हम मन–बुद्धि से जो कर रहे हैं उसे ही भक्ति समझते हैं। सन्तों से नाम लेकर भी अहंकार नहीं छोड़ते और उन्हें इंसान का पुतला ही समझते हैं। शुरू से ही अगर हमारा बर्तन बना हुआ है और संस्कार साथ आए हैं तो माया का मामूली सा पर्दा होता है सन्तों को देखने से ही हमारे अंदर प्यार का भांबड़ मच जाता है। ऐसा लगता है कि मैं इन्हें आज से नहीं पहले से ही जानता हूँ।

मैं मिसाल दिया करता हूँ जिस तरह किसी लड़के–लड़की का प्यार है, वे बाजार से गुजर रहे हैं वहाँ से दुनिया भी गुजर रही होती है, किसी

को किसी से कोई मतलब नहीं लेकिन जिनका प्यार होता है उनसे पूछें कि उनके साथ क्या बीतती है? इसी तरह जो सन्तों की संस्कारी आत्मा है जब आँखें चार होती हैं तो उनसे पूछें? ऐसी प्रेमी आत्माएं जब सन्तों की शरण में, सतसंग में आती हैं तो उनसे पूछें तुम्हें क्या होता है? ये आत्माएं चकोर की तरह टिकटिकी लगाकर बैठ जाती हैं उन्हें पता नहीं लगता कि हमारे दाईं या बाईं तरफ क्या हो रहा है?

गुरु सबको पार लगावें। जो जो उन चरनन ध्यावें।।

गुरु के पास औरत आए, मर्द आए, किसी जाति का आए, पुन्नी आए, पापी आए अगर पापी है तो वहीं खड़ा हो जाए। ऐसा नहीं कि गुरु पूर्व की तरफ जाने के लिए कहता है और वह पश्चिम की तरफ जाए तो गुरु का क्या कसूर है? गुरु सेवक से कोई मुआवजा नहीं लेता वह बिना कोई मजदूरी लिए सेवा करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

ऐसा करोड़ो में कोई एक आधा ही मिलेगा। सन्त सारे संसार को अपना घर समझते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो सन्त हमारे ऊपर अहसान न करे हमसे कुछ न माँगे और न ही हमारे ऊपर कोई बोझ डाले तो क्या हम उनसे मुफ्त का प्यार भी नहीं कर सकते? लेकिन हमारे अंदर मन बैठा है।''

गुरु से तू बेमुख फिरता। मन के नित सन्मुख रहता।।
करमों में पचता खपता। नर देही बाद गँवाता।।

सब शास्त्रों में लिखा है अगर गुरु के बगैर भक्ति करने जाते हैं तो राम भी ठुकरा देता है। कबीर साहब कहते हैं:

राम कृष्ण से को बड़ो तिन्हू भी गुरु कीन्ह।
तीन लोक के नेह का गुरु आगे आधीन।।

परमात्मा ने हमें इंसानी जामें की यह अमोलक दात हीरा बख्शा है अगर हम किसी महात्मा के चरणों में जाकर 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करते तो परमात्मा के दिए इस इंसानी जामे को हाथ से गँवा देते हैं।

अब चेतो समझो भाई। कर प्रीत गुरु संग आई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अब मौका है अभी जिंदगी है अगर पहले भूल गए हैं तो अब सच्चे दिल से प्यार–मौहब्बत से 'शब्द–नाम' की कमाई करें, गुरु की शिक्षा पर चलें। गुरु के साथ प्यार करना ही गुरु की शिक्षा पर चलना है।''

कह कर राधास्वामी गाई। करनी कर मिले बड़ाई।।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में गुरुमत को सन्तमत को बड़े प्यार से समझाया है कि महात्मा की शरण में क्यों जाना है, क्यों उनका कहना मानना है? हम जब तक उनका कहना नहीं मानते तब तक वह अंदर से हमारा दरवाजा नहीं खोलते। हम जैसे आए वैसे ही चले जाते हैं। हमारे जानी दुश्मन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये मन की फौजें हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मन जीते जग जीत।

अभी मन विषय–विकारों के जंगल में पागलों की तरह फिर रहा है। यह ब्रह्म का अंश है जब तक हम इसे इसके घर ब्रह्म त्रिकुटी तक नहीं पहुँचा देते, अपनी आत्मा को इसके पंजे से आजाद करवाकर इससे ऊपर नहीं ले जाते तब तक हम पढ़कर या सुनकर इसे बस में कर लेंगे यह सवाल अपने दिल–दिमाग से निकाल दें।

ऋषि–मुनि बुरे आदमी नहीं थे, उन्होंने अट्ठासी–अट्ठासी हजार, साठ–साठ हजार वर्ष तप किए उनमें कितनी शक्ति, कितनी तड़प और कितना प्यार था लेकिन पूरा गुरु न मिलने की वजह से वे हड्डियों का ढ़ेर हो गए। आखिर मन ने उन्हें मना लिया वे फिर दुनिया में आ गए। घर से

तो भक्ति करने साधु बनने के लिए निकले थे लेकिन मन ने धोखा दिया फिर घर वापिस आ गए। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

अगाह को तरांग पिच्छा फिर न मोडणा।
नानक सिज अवेहा बहोर न होसी जन्मणा।।

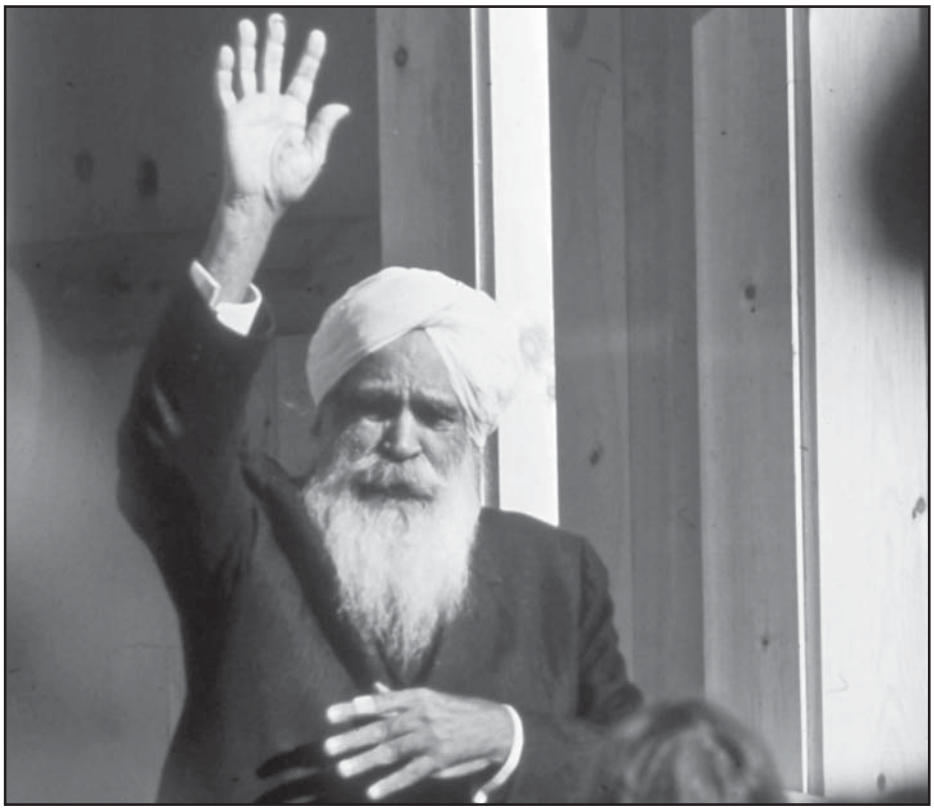

सन्तमत का उसूल है कि आगे की तरफ चलें। सन्तमत बातें करने का नहीं, करनी का मत है। सन्तमत कोई समाज नहीं यह अपने आपको सुधारने का मत है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम 'शब्द–नाम' की कमाई करें। स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में हमें जो समझाया है इसे हम अपनी जिंदगी में अपनाएं, मालिक ने हमें जो मौका दिया है इससे पूरा फायदा उठाएं। ***

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश

समय का सही इस्तेमाल

सावन आश्रम, दिल्ली

हम यहाँ केवल भजन–सिमरन करने के लिए आए हैं, हम यहाँ नए दोस्त बनाने के लिए नहीं आए। हमें यहाँ आकर अपने देश, घर और रिश्तेदारों को भूल जाना चाहिए। यहाँ आकर हमारा इरादा केवल भजन–सिमरन करने का ही होना चाहिए और हमें अपना ज्यादा से ज्यादा समय भजन–सिमरन में ही बिताना चाहिए। आप जितनी देर यहाँ हैं आप अपने **समय का सही इस्तेमाल करें।**

अपना कीमती समय भजन–सिमरन में लगाकर आप भी सन्त बन सकते हैं। यह समय बहुत कीमती है इसे छोटी–छोटी चीजों के लिए बेकार न करें। जब समय बीत जाएगा तब आप पछताएंगे अगर आप पाँच मिनट में शरीर छोड़ने वाले हैं तो आप अपने आपको कैसे बचा सकते हैं? आप अपने ख्यालों को हमेशा सिमरन में रखें।

परमात्मा रोशनी है, परमात्मा नाम है। परमात्मा लोगों को रोशनी दिखाने के लिए आता है जिसे हम खुद नहीं देख सकते, यह सब गुरु की ताकत का ही चमत्कार है।

परमात्मा आपके अंदर है। आप मन, कर्म और सोच से शुद्ध रहें। आप अपने काम से मतलब रखें अगर आपको कोई अनुभव होता है तो आप चुप रहें। आप सिर्फ उन्हीं लोगों की बात सुनें जो अंदर तक पहुँचे हुए हैं, दूसरों की बात सुनने से आप कहीं नहीं पहुँच सकते। आपको उस ताकत के दर्शन होने चाहिए।

हर सन्त का बीता हुआ कल होता है और हर पापी का आने वाला कल होता है, यह सीधी सी बात है। मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि

एक आदमी उपदेश दे सकता है कि वह रोशनी में है लेकिन असलियत में वह अंधेरे में होता है। रोशनी के बारे में वही आदमी बता सकता है जिसने रोशनी को देखा है। आप अपना समय दुनियावी दोस्तों के साथ बिताने की बजाय परमात्मा के साथ बिताएं जो आपको रोशनी दिखा सकता है।

राय सालिग्राम कहते हैं, ''यहाँ जितने पापी हैं, मैं उनमें सबसे बड़ा पापी हूँ।'' ये शब्द उनकी नम्रता दिखाते हैं। जो लोग सूर्योदय से तीन–चार घंटे पहले उठकर भजन–सिमरन करते हैं वे गुरु परमात्मा के दर्शन का आनन्द लेते हैं अगर आप सही हैं तो सारा संसार सही है। आप कह सकते हैं कि मेरे माता–पिता राजा–महाराजा हैं अगर आपके पास नाम नहीं है तो आपके पास कुछ भी नहीं हैं। आप भजन–सिमरन करेंगे तो आपका प्रतिबिम्ब मेरे ऊपर पड़ेगा।

आप अंदर जाएं फिर अपने आपको देखें! सन्त हमेशा अंदर जुड़ने के लिए कहते हैं। परमात्मा आपके अंदर है बाहर नहीं। परमात्मा आपके अंदर है लेकिन आप बाहरी दुनिया की तरफ देख रहे हैं। आप बाहर के मंदिर में क्यों जाते हैं? आपको अपने अंदर के मंदिर की आराधना करनी चाहिए।

सभी सन्त यही कहते हैं कि आप परमात्मा को अपने शरीर के अंदर ढूंढ़े। आपके शरीर के अंदर एक मंदिर है, बाहरी मंदिर तो केवल आपको दिशा दिखाने के लिए है। परमात्मा कहता है, ''मैं आपका सच्चा छिपा हुआ खजाना हूँ। आप अपने अंदर खोज करें मुझे पा लेंगे।'' दुनियावी चिन्हों का इस्तेमाल करते हुए अपने अंदर खोज करें और सच को ढूंढ़ें।

जो भी गुरु या सन्त चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के हों सबने हमें यही सिखाया है अगर आपके दोस्त अच्छे हैं तो आपके मन में धार्मिक या अच्छे विचार आएंगे अगर आपके दोस्त बुरे हैं तो आपके मन में बुरे विचार आएंगे। यह ध्यान देने वाली बात है, अच्छे विचारों से आप अच्छी राह पर चलेंगे, आपको दूसरों से क्या लेना है?

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

आप सदैव अपने ऊपर ध्यान दें, परमात्मा आपके अंदर है। आपके अंदर प्यार और नाम का बीज है। आप जिस अमृत की बूँद के लिए इस दुनिया में आए हैं वह आपके अंदर है। जब आप परमात्मा के चरणों में आ गए तो अपनी सारी चतुराई और दोहरे पन को छोड़ दें। रोम शहर के दो पादरियों ने 'नामदान' लिया। 'नामदान' लेने के बाद उन्होंने पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए? मैंने उनसे कहा, ''चर्च आपको पैसे देता है, आप उनसे कहें कि यह परमात्मा का पंथ है।''

आप जैसे-जैसे आगे जाएंगे आपका मन स्थिर होता जाएगा। आप सिर्फ उसकी बात सुनें जो अंदर जाता है, गुरु आपको अंदर जाने का तरीका बताता है। आपके अंदर एक लहर है लेकिन यह तभी मुमकिन है जब आप सभी दुनियावी चीजें त्याग दें। आप ध्यान दें कि आपकी आँखें, कान और जुबान आपके अंदर बुरे विचार लाएंगे आप इन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करें। बत्तख हमेशा पानी में रहती है लेकिन अपने पंखों को भीगने नहीं देती। आपको भी ऐसा ही बनना चाहिए कि आप दुनिया में रहते हुए दुनियावी न बनें।

यह मेरी घड़ी है, किसी ताकत ने इस घड़ी को पकड़ा हुआ है; वह ताकत मैं हूँ। आप जब गुरु के चरणों में बैठते हैं तो समझें कि आप परमात्मा के चरणों में बैठे हैं। आप और आपका गुरु एक ही बिस्तर पर सो रहे हैं लेकिन आप एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे। जो लोग अंदर नहीं पहुँचे वे यहाँ-वहाँ की बातों को ही सही बताएंगे।

परमात्मा और गुरु ही आपके सच्चे दोस्त हैं। मन एक चालाक दोस्त है जो आपको धोखा देता है। आप मेरे पास आए हैं मैंने आपको अपने साथ नहीं परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए कहा है। सभी सन्त अपने आपको सबसे बड़ा पापी कहते हैं।

गुरु अमरदास जी कहते हैं, ''कभी मैं एक गिरा हुआ इंसान था, जब मुझे 'नामदान' मिला तब मैं परमात्मा के चरणों में आ गया।'' जो अपने आपको नीचा समझता है वही सबसे ऊँचा होता है। आप आग के पास बैठेंगे तो आपको गर्मी महसूस होगी इसी तरह अगर आप किसी पवित्र इंसान के पास बैठेंगे तो आपको कुछ आराम मिलेगा। जिन्हें गुरु मिल जाता है उनके कर्म कट जाते हैं, वे अपने आपको दुनियादारों से अलग समझें। अगर आप दुनियादारी नहीं छोड़ते तो यही समझा जाएगा कि आप सतगुरु से नहीं मिले और आप इस मार्ग पर चलने के लिए तैयार नहीं।

गुरु को परमात्मा की तरफ से कमीशन मिली होती है, गुरु हम सबको सच्चखंड ले जा सकता है अगर हम साफ नहीं तो वह ऐसा नहीं करता। आप लोग मेरे काम को आसान करें, मैंने आपको साफ–सुथरा करना है। आप डायरी रखें, भजन–सिमरन करें इससे मेरा काम आसान होगा।

आपका घर जल रहा है लेकिन आप यहाँ–वहाँ भाग रहे हैं। अपने आपको ढूंढ़ने की कोशिश करें। बाहर की तरफ न देखकर अंदर की तरफ देखें। जो अपना दृष्टिकोण बदल लेते हैं वे कामयाब हो जाते हैं फिर आप देखेंगे कि आप परमात्मा के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

मैंने आपको सीधी और बहुत साधारण बात कही है। आप अपने **समय का सही इस्तेमाल करें**। मेरी बात मानने से आप अपना और मेरा काम आसान करेंगे। आप आज से ही अपना समय परमात्मा की डायरी में बिताएं अगर आप अपने ऊपर दया करेंगे तो मुझ पर भी दया करेंगे। क्या आप मेरी कही बातें मानने के लिए तैयार हैं? ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

रक्षक

जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए।।
सचु नामु सोई जनु पाए।।

वह प्रभु जिसे अपना खेल दिखाना चाहता है, जिसे बताना चाहता है कि मैं सबमें हूँ; उन्हें 'शब्द–नाम' की कमाई में लगा लेता है।

सो समदरसी तत का बेता।।
नानक सगल सृष्टि का जेता।।

परमात्मा सबके दिलों की जानता है। नाम की कमाई करने से हम परमात्मा में मिल जाते हैं, सारी सृष्टि को जीतने वाले बन जाते हैं और हमारे अंदर भी वही शक्ति पैदा हो जाती है।

जीअ जंत सभ ता कै हाथ।।
दीन दइआल अनाथ को नाथु।।

जीव–जन्तुओं की डोरी परमात्मा के हाथ में है, वह अनाथों का नाथ है।

जिसु राखै तिसु कोइ न मारै।।
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै।।

जिसे परमात्मा रखे उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं मार सकती। इस संसार में वही मरा हुआ है जिसे परमात्मा बिसार दे, अपनी भक्ति का दान न दे और अपना प्यार न बख्शे।

एक हिरनी गर्भवती थी, आराम से सोई हुई थी। शिकारी को पता लगा तो उसने एक तरफ जाल बिछा दिया, दूसरी तरफ शिकारी कुत्ता खड़ा कर

दिया, तीसरी तरफ आग लगा दी और चौथी तरफ खुद तीर कमान लेकर खड़ा हो गया। जब हिरनी को आग का सेक महसूस हुआ तो वह उठी, उसने देखा एक तरफ जाल दूसरी तरफ शिकारी कुत्ता तीसरी तरफ आग और चौथी तरफ शिकारी खुद तीर कमान लिए खड़ा है।

हिरनी ने परमात्मा के आगे फरियाद की, ''एक तो मुझे प्रसव का दु:ख है और उसके साथ एक दु:ख और आ गया।'' पशु–पक्षी भी अपनी जुबान से परमात्मा को याद करते हैं। हम जानते हैं कि दु:ख के समय सहज स्वभाव ही परमात्मा की तरफ ख्याल चला जाता है।

उस समय हिरनी ने परमात्मा को याद किया, परमात्मा ने उसकी सहायता के लिए बहुत जोर से तूफान चलाया। तूफान से आग उड़कर जाल पर गिर गई जिससे जाल जल गया। शिकारी जब तीर चलाने लगा उस समय जमीन में से साँप निकला, साँप ने शिकारी को काट लिया। शिकारी का हाथ हिलने से तीर कुत्ते को जाकर लगा। हिरनी आजाद हो गई, शिकारी के सारे फँदे नाकाम हो गए। जाल जल गया, कुत्ता मर गया, शिकारी को साँप ने डस लिया।

परमात्मा जिसका **रक्षक** है उसे कोई नहीं मार सकता। जो भी परमात्मा को याद करता है, परमात्मा उसकी मदद के लिए जरूर पहुँचता है।

तिसु तजि अवर कहा को जाइ।।
सभ सिरि एकु निरंजन राइ।।

परमात्मा सबकी रक्षा करता है, सब पर दया करता है। अफसोस की बात है कि हम परमात्मा को छोड़कर किसी और की पूजा करें किसी और से मदद माँगें कोई और मदद करने के काबिल नहीं। ***

धन्य अजायब

कुदरत करके वसया सोये
वक्त विचारे सो बन्दा होये

समय के अनुसार कुछ चीजें बदलनी पड़ती है इसी तरह अजायब बानी मासिक पत्रिका दिसम्बर 2020 के बाद प्रेस प्रिंटिंग नहीं हो पाएगी अत: अब आपको यह पत्रिका अपने फोन के whatsapp पर प्राप्त करनी होगी। आप कृपया हमें अपने whatsapp no. की जानकारी 99 50 55 66 71 पर दें। ताकि आपको Ajaibbani Hindi Magazine के ग्रुप में शामिल कर लिया जाए।

यह मासिक पत्रिका अजायब बानी व सन्त बानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर– 335039 जिला – श्रीगंगानगर (राजस्थान) द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें भी आप www.ajaibbani.org पर प्राप्त कर सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए कृपया 80 79 08 46 01 व 96 67 23 33 04 पर संपर्क करें।